मधु धवन द्वारा रचित उपन्यास तमिल पुत्र 'कल्कि'

शोधार्थी : नीलम देवी

मधु धवन का जन्म २१ अप्रैल,१९५२ इसवी में तरन-तारन के पंजाबी घराने में हुआ | घर में आर्थिक सम्पनता होने के कारण इनका बच्चपन अत्याधिक लाड-प्यार एवं वैभव में व्यतीत हुआ | दिवंगत पिताजी राजकुमार चौपडा अत्यंत धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होने के फलस्वरूप रामायण,महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथो का पठन-पाठन घर पर ही हुआ करता था | बहुभाषी पिता जी से प्रभावित होने के कारण पुत्री मधु को विभिन्न भाषाओं का सम्यक ज्ञान अर्जित हुआ हैं | माता जी शकुंतुला चौपडा अत्यंत सरल स्वभाव एवं मातृत्व की साक्षात् मूर्ति थी| घर में शिक्षित वातावरण होने के कारण इनको विभिन्न पुस्तके पढ़ने की रूचि शैशवकाल से ही रही, जिससे इनका रुझान पढ़ने की ओर अधिक रहा | मधु के व्यक्तित्व का निर्माण करने में सर्वाधिक योगदान उनके दादा जी का भी रहा हैं क्यों कि अक्सर वह देश-निर्माण एवं सामाजिक विषयों पर चर्चा करते रहते थे | लेखिका प्रकृति-प्रेमी भी हैं अक्सर वह बचपन में परिवार के साथ यात्राएँ करती रही | परिवार के साथ उनका अधिकांश बचपन यात्राओं में व्यतीत हुआ | विभिन्न जंगलो एवं नदियों के भ्रमण के कारण ही धीरे-धीरे वह प्रकृति प्रेमी हुई | लेखिका ने बी.ए एवं एम.ए की डिग्री सन १९६८ ई० में शिक्षा महारानी कालेज से और पी.एच.डी [१९८४] की डिग्री बंगलौर विश्वविद्यालय से संपन्न की | इसके साथ ही "डिप्लोमा प्रोडूसर" का डिप्लोमा कोर्स भी सन १९९० में 'अनामालिया विश्वविद्यालय' से किया| अध्यापन का अनुभव इनको ३३ वर्ष का हैं |

८ दिसंबर १९७४ को इनका विवाह संपन्न हुआ| विवाह के उपरांत ही उनका आगमन चेन्नई शहर में हुआ लगभग ३० वर्षो से मधु धवन हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी रही|इन्होंने अपनी प्रतिभा से हिंदी जगत को जो कुछ भी दिया है उसकी सराहना जितनी भी की जाएँ उतनी कम हैं| साहित्य की प्रत्येक विधा पर इन्होंने अपनी लेखनी चलाई हैं| इन्होंने "***कालाचक्र***" नामक एक **महाकाव्य** लिखा, उसके उपरान्त **चार खंड *काव्य: 1)हुतात्मा***-1994 *2)**भारत ललाट** -1999 3)**कारगिल की ललकार** -1999 4)**अमृतमयी** -2003 5)**धरा पर खिला दिया फूल** -2004 आदि |*

*तत्पश्चात इनके '**स्वर्णिम भारत**', '**अमृतमयी**', '**तुम** **भी बदल गये***' **आदि कविता संकलन** प्रकाशित हुए हैं |इन्होने **छः नाटक** लिखे : ***'मैंने कब चाहा'***, ***'भूल'***, ***'भगत सिंह'***, ***'त्रास'***, ***'भारत कहाँ जा रहा है'***, ***'आज की पुकार'*** **आदि** इनके प्रसिद्ध नाटक गिने जाते हैं|इसके साथ साथ **१२ उपन्यास** भी लिखे ,***उस मोड़ पर, प्यार भरे दादाजी, जुर्नामा, करवट लेता वक्त, आकांक्षा, तूफानी जंझा का दिया, महासागर का साक्ख, शक्ति पुंज, शिखरो से ऊँचा, तमिल पुत्र "कल्कि", सायबर माँ , मैं श्रृष्टि की आत्मा हूँ*** **इत्यादि|** इसके बाद चार **कहानी संग्रहों** का संपादन भी किया: ***झरते अश्रु, इंटरनेट का माउस, अमृत बूँदें, और खौंफ | इसके अतिरिक्त [हमारी भाषा हिंदी, प्रजोजन मूलक हिंदी, प्रयोजन मूलक पत्राचार आदि***], एक एकाकी-संग्रह *[**बाल किशोर एकाकी संग्रह**]* कई पुस्तकों का संपादन भी किया '***इन्टरनेट का माउस***' कहानी संग्रह के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित भी हुई| मधु धवन का सर्वोपरि योगदान हिंदी साहित्य के प्रति रहा और इसके साथ में वह एक रचनाकार, संपादक, समाज-सेवक, शिक्षाविशारद के रूप में हमारे सामने मुखरित होती हैं|वह 'स्टेला मेरिस' कालेज में

प्राध्यापक के पद पर आसीन रही | हिंदी प्रेमी होने के कारण इन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए तमिलनाडू क्षेत्र के स्कूलों और कालेजों में स्वयं निरीक्षण करके दसवी कक्षा के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया | इसके अतिरिक्त "मधुरे कामराज विश्वविद्यालय" के बारवी,बी.ए.,एम.ए. के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा भी निश्चित की | इन्होंने कर्नाटक,केरल,आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडू के अध्यापकों के लिए "कक्षा अध्यापन प्रणाली विज्ञान कार्य शिविर" भी संचालित किया | इसके साथ-साथ दो **साहित्यिक -संस्थाओं** का संगठन भी किया जैसे ***"तमिलनाडू हिंदी साहित्य अकादमी"*** **एवं** ***"तमिलनाडू महिला लेखिकाओं के लिए बहुभाषी संस्था"*** तथा ***'सम्प्रेषण'*** नामक विडियो का वितरण दक्षिण के अहिन्दी भाषा **क्षेत्र में** निशुल्क कराया | इसके माध्यम से अहिन्दी भाषी वर्ग को हिंदी भाषा से परिचित कराया गया |

पुरस्कार एवं सम्मान- लेखिका कई पुरस्कारों से पुरस्कृत की गई हैं:-

१६ अप्रैल १९९७ को समर्पित सेवा का प्रशस्ति–पत्र दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की ओर से दिया गया हैं |

२८ मई,२००० को उनकी सुदीर्घ हिंदी सेवा सारस्वत साधना कला विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ शैक्षिक प्रदेय शोध कार्य तथा अंतरप्रतिष्ठा के आधार पर विद्यासागर की उपाधि से अलंकृत किया गया |

१४ सितम्बर,२००१ में इंटरनेशनल बायोग्राफिकल कैंब्रिज इंग्लैंड द्वारा २००१ के अन्तरराष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में उन्हें पुरस्कार दिया गया | २००१ में हिंदी में और २००२ में मद्रास के दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में विशिष्ठ साहित्यिक रचनाकार के रूप में उन्हें सम्मानित कर पुरस्कार दिया गया |

तमिल पुत्र 'कल्कि' उपन्यास स्वतंत्रा-प्राप्ति के दौरान लिखा गया उपन्यास है | इस उपन्यास में देशभक्ति की भावना पूर्णता दृष्टिगोचर होती है | लेखिका ने इस उपन्यास में मुख्य पात्र 'कल्कि' उर्फ़ कृष्णमूर्ति के माध्यम से एक ऐसे महान व्यकितत्व को उजागर करके हमारे सामने प्रस्तुत किया हैं जिसने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए स्वयं मानसिक और शारीरिक प्रताड़नाओं को लगातार झेला हैं और युवाओं में देशभक्ति का जूनून पैदा करने में सक्रिय योगदान निभाया है | कृष्ण स्वयं कहते है "त्यागराज के संगीत समारोह के उपरांत वहाँ से गाँव- गाँव जाकर राष्ट्रीय गीतों के माध्यम से देशप्रेम की भावना भरने का काम करेंगे |" 1 कृष्णमूर्ति जैसे देशभक्त अपने देश की आन बान और शान को बरक़रार रखने के लिए किसी भी हद से गुजरने को सदैव तत्पर रहते है | उपन्यास का नायक हम सबके समक्ष एक क्रांतिकारी के रूप में मुखरित होता है जो अपने भीतर क्रांतिकारी भावना संजोएँ हुए है और अपने देश पर कोई भी मुसीबत आने से पूर्व निडरता से अपनी छाती चोडी करके देश पर आई मुसीबतों को अपने में समाहित कर लेता है | मूल रूप से "कल्कि" शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है "अवतार" अर्थात हिन्दू धर्म में भगवान विष्णु का दसवां एवं अंतिम अवतार कल्कि नाम से अभिहित हैं | कृष्णमूर्ति का व्यक्तित्व भी प्रभावशाली तथा लोगों की रक्षा करने में लगा रहता हैं | वह भी सत्य- असत्य का ध्यान रखके लोगों की सेवा करने में सक्रिय रहता हैं| "कल्कि" उर्फ़ कृष्णमूर्ति ही उपन्यास का प्रमुख पात्र हैं जिसका जन्म तमिलनाडू की उर्वरा धरती पर हुआ जिसने हर क्षेत्र में अपने ज्ञान का तथा देशभक्ति का ढंका बजाया | इतना ही नही वो तमिल प्रदेश तथा तमिल साहित्य में इतना शक्तिशाली और प्रभावी रहा हैं कि उनके नाम पर साहित्य के काल का विभाजन होता हैं |

हिंदी साहित्य में जो स्थान भारतेंदु हरिश्चंद्र का हैं, वही स्थान तमिल-साहित्य में कृष्णमूर्ति का हैं|

उपन्यास में लेखिका ने विभिन्न पक्षों पर अपनी दृष्टि डाली हैं| कहा जाता है कि जब देश किसी अन्य देश के अधीन होता है तो उसका अपना अस्तित्व अपनी सभ्यता, परम्परा, धर्म ,सब नष्ट होने लगता हैं| उसका अपना साम्राज्य डगमगाने लगता हैं| ऐसे विषम परिस्थितियों **में देश** के स्वाभिमान के लिए बलिदान की आवश्यकता पड़ती है, गोलियों तोपों का सामना करना पड़ता हैं, फाँसी के फंदे को हस्ते-हस्ते चूमना पड़ता हैं|

निसंदेह देश पर मर मिटने वालो की संख्या अनगिनत होती हैं| उनकी हजारों मिसाले इस देश के स्वतंत्रता-संग्राम सेनानियों में मिल जायेगी किन्तु देश के लिए दक्षिण भारत में जिन मानसिक एवं शारीरिक मुसीबतों को लगातार 'कल्कि' झेलते रहे उसे भी नज़रन्दाज नहीं किया जा सकता|

भारत माता की गोद में पल रहे सपूतो का गुणगान जितना किया जाये उतना कम हैं| जो देश के लिए अपना **सर्वस्व** न्यौछावर कर देते हैं उनकी गणना महान आत्माओ में की जा सकती हैं| उनके **धैर्य,** पराक्रम, देश-प्रेम आदि गुणों के विद्यमानता के कारण ही वह अन्य लोगो से भिन्न माने जाते हैं| लेखिका एक देशभक्त है और देशभक्ति की भावना उनके कण-कण में बसी हुई हैं, इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने उपन्यास तमिल पुत्र "कल्कि" में कृष्णमूर्ति उर्फ़ "कल्कि" पात्र के माध्यम से देशभक्ति की भावना को दर्शाया है| युवक के हृदय में देशभक्ति का लहू उबल रहा हैं| वह अपना सर्वस्य देश के प्रति न्यौछावर करने के लिए तत्पर हैं| इसी भावुकता के कारण वह कई

बार जेल भी जाता हैं | उपन्यास में देशभक्ति को जागृत करने के लिए गीतों की स्वरलहरी के माध्यम से लोगों के रग-रग में जोश भर दिया जाता था | देश पर शहीद होना ही जीवन हैं | ऐसी देशप्रेम की भावना लोगो के मन- मस्तिष्क में भरी जाती थी |

"शहीदों की चित्ताओं पर लगेगे हर बरस मैले वतन पर मिटने वालो का यही बाकी निशा होगा"2

तमिल संस्कृति में विभिन्न पर्वो एवं त्योहारों को दिखाया गया हैं जैसे दक्षिण में सबसे ज्यादा मनाये जाने वाला पर्व दशहरा जो दस दिन का पर्व होता हैं | इसके साथ-साथ वन-महोत्सव, बसंत-ऋतु महोत्सव,मकर-संक्राति,कनु-पोंगल आदि त्योहारों को लोग हर्षोउल्लास से मनाते हैं | इन त्योहारों की महता आज भी बरकरार हैं |

इतिहास साक्षी हैं कि विषम-परिस्तिथियों के अनुरूप होते हुए भी तमिल संस्कृति आज भी विद्यमान हैं क्यूंकि कालांतर से किस प्रकार देश अन्य शासकों के अधीन रहा आ रहा हैं | उदहारण के तौर पर छठी शताब्दी से आठवी शताब्दी तक पल्लव वंश के शासक अधिक समृद्द थे और लगभग ६०० वर्ष तमिल और तेल्लुगु क्षेत्र में राज्य किया | तत्पश्चात नौवी से बारहवी शताब्दी तक ये प्रदेश चौल राजाओ के अधीन रहा | इतनी उथल पुथल होने पर भी मंदिरों एवं गुरुकुलों के माध्यम से तमिल और संस्कृति का पठन-पाठन चलता रहा | यह तमिल संस्कृति की अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि हैं, यह इसकी विशेषता हैं कि यह आज भी जीवित हैं |

कृष्णमूर्ति के भीतर भी अपने तमिल साहित्य को जानने की गहरी पिपासा थी | विभिन्न मंदिरों में भ्रमण करने के उपरांत ही उसने तमिल संस्कृति को जाना है | अय्यास्वामी जो उनके पड़ोसी थे उनसे

उन्हें तमिल साहित्य के बारे में जानने में अधिक सहयोग प्राप्त हुआ |

लेखिका विवाह को समाज का अनिवार्य नियम मानती हैं | उन्होंने विवाह की प्रमुखता को दर्शाया हैं और विवाह को समाज का अनिवार्य नियम माना हैं जिसको कृष्णमूर्ति के बड़े भाई के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं:-

"तुम जानते हो कि पिछली बार तुम्हारी शादी टूट गयी थी और अब यदि न हो पाई तो फिर कहीं ऐसा ना हो की शादी ही न हो सके"| **3**

उपन्यास में बाल-विवाह एवं अनमेल-विवाह की समस्या को भी दिखाया गया हैं | मुतुलक्ष्मी के पिता उसका विवाह १२ साल की उम्र में एक दोहाजू के साथ करवाना चाहते हैं:-

"रूपवती हैं तो क्या...हुआ करे...किस तरह माँ ने ठुकराया था...मेरे मुतु की शादी किसी दोहाजू के साथ ... सुनके ही फट पड़ी थी"| **4**

"दोहाजू में क्या बुराई हैं? देखने में सुन्दर हैं, नौजवान हैं ... अभी तक कोई बालबच्चा भी तो नहीं हैं"| **5**

उपन्यास में आडम्बरों पर कटाक्ष किया हैं, साथ में विधवाओं की स्थिति दर्शायी गई हैं कि किस प्रकार सामाजिक मानसिकता के अनुसार विधवा औरत एक अपशगुन का प्रतीक मानी जाती हैं | उदहारण के तौर पर:-

"मान लीजिये आपके घर में शादी होने वाली हैं शगुन के लिए सब मिलकर जा रहे हैं अगर शहर में कोई विधवा विरोधी हैं तो वह शादी रुकवा सकती हैं उस विधवा को किसी षड्यंत्र रचने की

आवश्यकता नहीं है जब आप निकल रहे है तो उसका केवल सामने आना ही काफी है, आपने जितनी भी मेहनत की होगी, सब पर पानी फिर जायेगा, शादी रुक जायेगी"| **6**

उपन्यास में नारी-शिक्षा पर बल दिया गया हैं | अगर नारी शिक्षित नहीं होती है तो समाज में उसका शोषण होता रहता हैं, वह अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं | शिक्षा के अभाव के कारण उसके साथ छल:कपट करके उसके अंगूठो पर सियाही लगाकर उसकी सारी सम्पति हड़प ली जाती हैं और उसे एक पल में रानी से भिखारिन बनने पर विवश किया जाता हैं | इसका उदहारण उपन्यास में दिखाया गया हैं | उदाहरण के तौर पर : कृष्णमूर्ति कलकते के अधिवेशन में जब गया तो वहाँ एक पगली की कथा सुनी जिसका असली नाम 'लक्खी' था | उसका पति बहुत बीमार हो गया था तो उसने साहूकार से कुछ पैसे उधार लिए थे | यह पड़ना लिखना जानती नहीं थी | साहूकार ने इसकी मुसीबत का फ़ायदा उठाया | इसके अंगूठे पर सहाई लगा-लगाकर सारी ज़मीन हड़प ली | पति की मौत हो गयी | बेबस होकर अपने अंगूठे ही जला डाले | तब से पागल हो गयी हैं - "लक्खी" नामक नारी समाज की उन नारियों का किरदार निभाती हैं जो अशिक्षित हैं-

"यदि मैं पड़ी लिखी होती तो अपनी पच्पन्न एकड़ ज़मीन की मालकिन होती....भिखारिन नहीं | हमारे देश की नारियों को नजरंदाज मत करो | उन्हें किसी तरह शिक्षित करो"| [7]

विश्वास- अन्धविश्वास पर भी आपकी दृष्टि गई हैं | घर में दूध गिर जाने को ही वह अपने घर में बारह साल की मुतुलक्ष्मी के विवाह न होने के साथ जोड़ते हैं |

उनका मानना है कि दूध गिर जाना अपशगुन हैं और " यही तो कारण है कि मुत्तुलक्ष्मी बारह साल की हो गयी लेकिन कोई वर ही नहीं मिला" | [8]

उपन्यास में दहेज़ की समस्याँ को भी दर्शाया गया हैं | दहेज़ देना समाज के लिए सही नहीं उदाहरणता मुतुलक्ष्मी के पिता अपनी बेटी के विवाह के समर्थन में कहते हैं-

"अरे भाई, मैं कोई बड़ा ज़मीनदार तो हूँ नहीं जो मुँह-माँगा दहेज़ दे सकूँ | एक मामूली किसान हूँ और मामूली किसान की बेटी मामूली परिवार में ही जायेगी" [9]

धन-अभावता में लडकियाँ क्या लड़के भी अशिक्षित रह जाते हैं | कृष्णमूर्ति को पढ़ने की अत्यंत तीर्व-रूचि होती हैं किन्तु घर में धनाभाव एवं पिता की अकाल मृत्यु के कारण उसको शिक्षार्जन करने में बाधा उत्पन्न होती हैं | ऐसी स्थिति में उसकी शिक्षा का खर्च उनके पड़ोसी अय्यास्वामी उठाते हैं | यह समस्याँ केवल कृष्णमूर्ति की नहीं बल्कि हर उन नौजवान युवकों एवं युवतियों की है जिनका परिवार आर्थिक तंगी के कारण उनकी शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते हैं | उनकी शिक्षार्जन की त्रीव ज़िज्ञासा मन में ही दबी रह जाती हैं |

उपन्यास में आंतरिक अंतर्द्वंद को विभिन्न पात्रों के माध्यम से उभारा हैं

- **कुंज्मल** –मुतुलक्ष्मी की माता एवं रामास्वामी की पत्नी के माध्यम से

"गृहस्थी की गाड़ी खींचते-खींचते उसके अपने अरमान दरक जाते हैं इनका क्रौध भी तर्क-संगत हैं जिसके तीन-तीन बेटियाँ हो उस पिता

के मन में क्या बीत रही होगी ...? मेरी भी तो गलती थी...बच्चों को इतनी ज़ोर से क्यों डांट लगाई ...? मुझे भी तो पता था दूध दुह रहे हैं | गाय सप्ताह में दो बार ही तो दूध देती है | बाल्टी भर दूध देकर ही तो चावल लाये जाती थे ....उसे अपनी अक्ल पर गुस्सा आने लगा" |[10]

- **कृष्णमूर्ति**

कृष्णमूर्ति के आंतरिक द्वन्द को प्रस्तुत करते हुए दिखाया गया हैं

"कृष्ण का मन अनुपात में जल रहा था | कहीं कोई राहत महसूस नहीं महसूस हो रही थी | कैसा बचपना किया था लड़की के पिता ने ....दर्द्पूर्ण सत्य को कोमल से कोमल शब्दों के साथ भी तो जोडकर कहा जा सकता हैं जैसे फूलो के साथ कांटे भी तो होते हैं, तो फूल इस तरह दो कि वे चुबे नहीं ...कांटा इस प्रकार पकडाया कि सीधा दिल में जा चुबा था | उसका लहूलुहान दिल तड़प रहा था | ज्यों-ज्यों बैलगाड़ी चलती जा रही थी त्यों-त्यों उसके विचार चलने लगे''| [11]

व्यंगात्मक पक्ष

उपन्यास में व्यंगात्मकता भी दिखाई पड़ती हैं की "ब्राह्मण वर्ग से संघर्ष करने वाले अब्राह्मण वर्ग को चेतावनी यह है कि किसी ब्राह्मण से झगड़ा मोल लेने से पूर्व आपको तीन बार सोंचना चाहिए | कोई भी ब्राह्मण आपके शुभ कार्य में बाधा डाल सकता हैं | इसके लिए उसे लठेत लाने की जरुरत नहीं | आपके प्रस्थान का समय उसे पता हो | आपकी आशा-निराशा में बदल जायेगी"|[12]

अध्ययन के उदेश्य में हम यही कह सकते सकते हैं कि लेखिका अत्यंत उदार तथा विन्रम स्वभाव की हैं | लेखनी के सन्दर्भ में यदि बात की जाये तो उन्होंने समाज के प्रत्येक पहलू पर अपनी लेखनी चलायी हैं वह अत्यंत उदार प्रकृति वाली एक देशभक्त,हिंदी भाषी प्रेमी तथा नारी शिक्षा पर बल देनी वाली एक प्रमुख लेखिका हैं |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-

1. धवन ,मधु .डॉ ,"तमिल पुत्र कल्कि"प्रकाशन ,वाणी प्रकाशन , ,वर्ष २०१७पृ| 128.
2. वही| 70 .पृ ,
3. वही| 103 .पृ ,
4. वही.पृ , 80 |
5. वही.पृ , 80 |
6. वही.पृ , 123 |
7. वही.पृ , 76 |
8. वही.पृ , 79 |
9. वही.पृ , 80 |
10. वही, पृ. 81 |
11. वही, पृ. 87 |
12. वही, पृ. 123 |

नीलम देवी

पीएचडी शोधार्थी

कश्मीर विश्वविद्यालय सम्पर्क-dneelam102.nd@gmail.com